

| | | |
|----------------------------|----|----|
| एतच्छ्रुत्वा वचनं | 11 | 35 |
| एतद्योनीनि भूतानि | 7 | 6 |
| एतन्मे संशयं कृष्ण | 6 | 39 |
| एतान्न हन्तुमिच्छामि | 1 | 35 |
| एतान्यपि तु कर्माणि | 18 | 6 |
| एतां दृष्टिमवष्टभ्यः | 16 | 9 |
| एतां विभूतिं योगं च | 10 | 7 |
| एतैर्विमुक्तः कौन्तेय | 16 | 22 |
| एवमुक्तो हृषीकेशः | 1 | 24 |
| एवमुक्त्वार्जुन संख्ये | 1 | 47 |
| एवमुक्त्वा ततो राजन् | 11 | 9 |
| एवमुक्त्वा हृषीकेशम् | 2 | 9 |
| एवमेतद्यथात्थ त्वम् | 11 | 3 |
| एवं परम्पराप्राप्तम् | 4 | 2 |
| एवं प्रवर्तितं चक्रम् | 3 | 16 |
| एवं बहुविधा यज्ञाः | 4 | 32 |
| एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा | 3 | 43 |
| एवं सततयुक्ता ये | 12 | 1 |
| एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म | 4 | 15 |
| एषा तेऽभिहिता सांख्ये | 2 | 39 |
| एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ | 2 | 72 |